हिन्दी विषय के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, रूचि तथा अध्ययन आदतों पर कला एकीकृत अधिगम विधियों के प्रभाव का अध्ययन

पीएच.डी. (शिक्षाशास्त्र)
उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु
दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग, आगरा
को प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

(2019)

निर्देशिका

डॉ0 आरती सिंह

शोधार्थिनी

रूपाली सिंह

विभागाध्यक्ष
(एम.एड., एम.फिल., पीएच.डी.)

संकाय प्रमुख
(शिक्षा संकाय)

शिक्षा संकाय

दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा

1.0.0 प्रस्तावना

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो जीवनपर्यन्त चलती है। यह प्रक्रिया बालक के ज्ञान, कौशल एवं व्यवहार में परिवर्तन लाकर उसका विकास करती है तथा अपने अनुभवों व क्रियाशीलता से बालक शिक्षा ग्रहण करता है। यह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके फलस्वरूप विद्यार्थी अपना समायोजन चारों ओर के भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक वातावरण से करता है एवं जीवन का प्रत्येक अनुभव उसके ज्ञान में वृद्धि करता है। शिक्षा विद्यार्थी के ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्तियों के विकास से व्यवहार में परिवर्तन लाती है।

समाज में नित नये परिवर्तन हो रहे हैं। इन परिवर्तनों का प्रभाव शिक्षा पर भी पड़ रहा है। शिक्षण को समय के अनुकूल बनाने के लिए शैक्षिक क्रियाकलापों में निहित नित नई प्रवृत्तियों ने अपनी उपयोगिता सिद्ध की है। शिक्षा में परिवर्तन के साथ–साथ शिक्षण पद्धतियों में भी परिवर्तन की आवश्यकता है। **लुइस (1979)** शिक्षा को समाज का अभिन्न अंग मानते हैं और वे यह भी मानते हैं कि शिक्षा के बिना सभी ज्ञान के भण्डार एवं चारित्रिक मापदण्ड नष्ट हो जायेंगे। शिक्षण औार अधिगम एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। शिक्षक को यह आवश्यक हो गया है कि वह किस विधि से शिक्षण को रूचिकर बना सकता है। वर्तमान समय में शिक्षण पद्धति को ही नहीं अपितु शिक्षण को भी रूचिकर बनाने के लिए कक्षा–कक्ष में नई–नई गतिविधियों एव सृजनात्मक कार्यों को स्थान दिए जाने की आवश्यकता है। शिक्षा के सम्बन्ध में **शिक्षा आयोग (1964–66)** के द्वारा कहा गया है– ''भारत के भाग्य का निर्माण इस समय उसकी कक्षाओं में हो रहा है। हमारा विश्वास है कि यह कोई चमत्कार नहीं है। विज्ञान और शिल्प–विज्ञान पर आधारित इस दुनियाँ में शिक्षा ही लोगों की खुशहाली, कल्याण और सुरक्षा के स्तर का निर्धारण करती है। हमारे स्कूल और कॉलेजों से निकलने वाले छात्रों की योग्यता और संख्या पर ही राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के उस महत्वपूर्ण कार्य की सफलता निर्भर करेगी जिसका प्रमुख लक्ष्य हमारे रहन–सहन का स्तर ऊँचा उठाना है।''

किसी भी शिक्षण प्रक्रिया में भाषा का होना अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा शिक्षण प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हैं। भाषा अभिव्यक्ति का ऐसा साधन है

जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों के सामने प्रकट करता है। विद्यार्थियों की कक्षा में अभिव्यक्ति अनेक माध्यमों से होती है। किसी की अभिव्यक्ति दृश्य माध्यम से होती है, किसी की अभिव्यक्ति श्रव्य माध्यम से, तो किसी कि स्पर्शात्मक होती है। जब शिक्षक भिन्न–भिन्न अभिव्यक्ति के माध्यम को अपनी शिक्षण प्रक्रिया में शामिल कर लेते हैं तब वे अभिव्यक्ति की सम्प्रेषण क्षमता को और प्रभावी बनाने में सक्षम हो जाते हैं। कला के द्वारा शिक्षण बालक को अभिव्यक्ति करने का अवसर देता है। सम्पूर्ण संसार में 3000 भाषाएँ बोली जाती हैं जिनमें हिन्दी भी एक भाषा है। **Worf (1956)** ने कहा है कि ''भाषा विचारों और भावनाओं को आकार देती है, जो वास्तविकता की एक धारणा को निर्धारित करती है।'' किसी भी भाषा एवं साहित्य के शिक्षण में शिक्षक की बहुज्ञता, मानसिकता एवं विषय के प्रति उसके लगाव की अहम् भूमिका होती है।

भाषा के बगैर मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। भाषा मानव के सम्प्रेषण का सबसे शुद्ध और सार्वभौमिक माध्यम है। विद्यालय में प्रायः तीन भाषाएं पढ़ाई जाती है– हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत। इन भाषाओं में से बच्चे हिन्दी और संस्कृत को बिल्कुल पढ़ना पसन्द नहीं करते हैं। भाषा का शिक्षण वैज्ञानिक ढंग से करना चाहिए क्योकि हिन्दी एक वैज्ञानिक भाषा है। वर्तमान समय में हिन्दी बोलने और समझने वालों की संख्या लगभग 70 करोड़ है। देश से बाहर भी करोड़ों लोग इसे जानते हैं। हिन्दी मातृभाषा होते हुए भी उस स्तर पर नहीं पहुँच पाती है जहाँ उसे होना चाहिए।

विद्यार्थी हिन्दी विषय में अरूचि लेते हैं और उसे अनुपयोगी विषय मानकर छोड़ देते हैं। हिन्दी के अध्यापक भी कक्षा–शिक्षण में इस तरह शिक्षण करते हैं कि वह विद्यार्थियों को रूचिकर नहीं लगता और वह हिन्दी विषय में रूचि नहीं लेते हैं। हिन्दी के प्रति बच्चों का रूझान कम होने का मुख्य कारण विषय की शिक्षण विधि है। हिन्दी को परम्परागत रूप से पाठ्य–पुस्तक विधि द्वारा पढ़ाया जाता है जिससे विद्यार्थी हिन्दी विषय को पढ़ना नहीं चाहते हैं। विद्यार्थियों का रूझान कुछ सृजनात्मक कार्य करने पर होता है, इसलिए शिक्षण विधियों में बदलाव की आवश्यकता है। नवीन शिक्षण विधियों का प्रयोग करके शिक्षक अपने शिक्षण को प्रभावी बना सकते हैं।

सृजनात्मक चिन्तन की प्रक्रिया ने शिक्षा में क्रान्ति ला दी है। इसने अधिगम प्रक्रिया को बहुत प्रभावित किया है। शिक्षण की प्रक्रिया में सृजनात्मकता बहुत आवश्यक है। कला एकीकृत अधिगम विधियों द्वारा शैक्षिक जगत के जीवन में जो सुगमता, सरलता व सृजनात्मकता आदि आयी है वह उसकी बड़ी देन है और वह इन विधियों के महत्व को सिद्ध करती है। नवीन विधियों का प्रयोग करके शिक्षण किया जाये तो निस्संदेह यह इस दिशा में एक सफल प्रयोग होगा। आधुनिक विधियों द्वारा हिन्दी विषय को रोचक एवं व्यवहारोपयोगी बनाया जा सकता है। अधिगम के अन्तर्गत दृश्य, घ्राण्य, श्रव्य और स्पर्श ये चारों इन्द्रियों का सक्रिय सहयोग अनिवार्य एवं अपरिहार्य है। **यशपाल समीति** ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय में एक रिपोर्ट **"बिना बोझ सीखना"** सन् **1993** में प्रस्तुत की थी। **एन.सी.एफ. (N.C.F. 2005)** ने भी पाठ्यक्रम में भार की समस्या को भी सन्दर्भित किया गया है। शिक्षा में कला एकीकृत अधिगम विधियों का प्रयोग बिना बोझ के सीखने पर ही बल देता है।

व्यापक शोधों पर आधारित यह सर्वविदित तथ्य है कि विद्यार्थी कला के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने में रूचि लेते हैं। शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर कला के विभिन्न रूपों का समेकन अन्य विषयों से कर सकते हैं। जैसे – संगीत, नृत्य, चित्रकारी, नाटक, पेंटिंग, मॉडलिंग निर्माण, दस्तकारी, डिजाइन आदि के समेकन से अधिक प्रभावकारी शिक्षण हो सकेगा। कला एकीकरण द्वारा विद्यार्थी एक रचनात्मक प्रक्रिया में संलग्न होते हैं, जो एक कला के रूप में अन्य विषयों को जोड़ते हैं। 19 वीं शताब्दी में विभिन्न रूपों में विद्यमान कला शिक्षा ने जॉन ड्यूवी के प्रगतिशील शिक्षा सिद्धान्त के रूप में लोकप्रियता प्राप्त की। **लियोन विंसलो का दि इंटीग्रेटेड आर्ट प्रोग्राम (1939)** में यह लेख प्रकाशित हुआ जो अमेरिकी स्कूलों में पढ़ाए जाने वाले कला और अन्य विषयों के बीच अंतर का वर्णन करता है। 20वीं शताब्दी के अन्त में पब्लिक स्कूलों में कला शिक्षा की भूमिका विद्यालयों में बढ़ गयी।

कला के माध्यम से सीखने–सीखाने में कौशलों और समझ के विकास में सहायता मिलती है, जिससे विद्यार्थियों के शरीर मन और मस्तिष्क तीनों क्रियायें करते हैं।

इसके द्वारा हिन्दी विषय को सुदृढ़ बनाने के साथ–साथ हिन्दी की जटिल अवधारणाओं को स्पष्ट किया जा सकेगा। कला एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थियों को विभिन्न माध्यमों जैसे–चित्रकला, संगीत, नृत्य, नाटक के अनुभव से गुजारते हुए विभिन्न कलाओं से उनका परिचय कराया जाता है। कला के द्वारा सीखना उसकी प्रक्रिया में निहित है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2000) ने स्कूली शिक्षा के लिए इस बात पर बल दिया कि शिक्षा को अपने स्वयं के सन्दर्भ से निकलने वाले अभिनव प्रयोगों और अनुभवों पर विश्वास करना चाहिए। शिक्षक को नवीन विधियों और रचनात्मकता का महत्वपूर्ण योगदानकर्ता माना जाता है जो हिन्दी भाषा के शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं। हिन्दी के सम्बन्ध में संविधान के **अनुच्छेद 343** के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी है। संविधान के **अनुच्छेद 350 (क)** में प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाओं का उल्लेख हुआ है। हिन्दी हमारी मातृभाषा है अतः मातृभाषा का शिक्षण प्राथमिक स्तर पर आवश्यक है। हिन्दी भाषा का शिक्षण साहित्यिक अभिरूचि के अभाव में कठिन होता है। साहित्यिक अभिरूचि के साथ भाषा पर एकाधिकार होना भी अत्यन्त आवश्यक है, तभी साहित्य का शिक्षण प्रभावपूर्ण हो सकता है। शिक्षा में भाषा का बहुत महत्व है बिना किसी भाषा के अभाव में शिक्षा सम्भव नहीं है। भाषा का ज्ञान किसी भी ज्ञान को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है।

1.1.0 हिन्दी भाषा का साहित्य

हिन्दी के साहित्य को दो विधाओं में बाँटा गया है– गद्य और पद्य जिसके अन्तर्गत रचनाएँ लिखी जाती हैं। किसी भी भाषा में भाव अभिव्यक्ति के लिए या तो गाकर अपनी बात रखेंगे या फिर सीधे–सीधे बिना तकुबंदी के उसे कहेंगे। हिन्दी में भी ऐसा ही है। जैसे–जैसे भाषा का विकास होता गया इससे बनने वाले गद्य और पद्य का भी वर्गीकरण होता चला गया।

1.1.1 गद्य

वाक्यों में बंधी ऐसी रचना जो विचार प्रधान हो गद्य कहलाती है। मनुष्य की बोलने या लिखने पढ़ने की छंदरहित साधारण व्यवहार की भाषा को गद्य कहा जाता है। गद्य वह

विधा है जिसके अन्तर्गत हम पत्र, निबन्ध, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, लेख आदि लिखते हैं। गद्य की विभिन्न विधायें नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, आलोचना, आत्मकथा, जीवनी आदि हैं। **मानक हिन्दी शब्दकोश (2005) के अनुसार**–''वह रचना जो छन्दोबद्ध न हो बनावटहीन रचना गद्य कहलाती है।''

1.1.2 पद्य

इसके विपरीत पद्य वह विधा है जिसके अन्तर्गत हम कविता, काव्य, गाने, भजन आदि लिखते हैं। पद्य को विभिन्न राग का प्रयोग कर सुन्दर शैली में गाया जा सकता है। छन्दबद्ध या छन्दमुक्त ऐसी संगीतात्मक रचना जिसमें भाव एवं कल्पना की प्रधानता हो पद्य कहलाती है। **मानक हिन्दी शब्दकोश (2005) के अनुसार**–''वह रचना जिसमें काव्य के गुण हों जैसे छन्दोबद्ध रचना, गाने योग्य रचना पद्य कहलाती है।''

1.1.3 व्याकरण

किसी भी भाषा के अंग प्रत्यंग का विश्लेषण तथा विवेचन व्याकरण कहलाता है। व्याकरण उस शास्त्र को कहा जाता है, जिसमें भाषा के शुद्ध करने वाले नियम बताए गए हों। भाषा के शुद्ध और स्थायी रूप को निश्चित करने के लिए नियमबद्ध योजना की आवश्यकता होती है, और इस नियमबद्ध योजना को हम व्याकरण कहते हैं। **मानक हिन्दी शब्दकोश (2005) के अनुसार**–''वह विधा जिसके द्वारा भाषा के शब्दों, अनेक रूपों, प्रयोगों आदि का ज्ञान होता है, उसे व्याकरण कहते हैं।''

प्रायः प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं में विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों के बीच अन्तः सम्बन्ध बताने की भी आवश्यकता होती है। कला को कक्षाओं में अन्य विषयों से अलग माना जाता है लेकिन यदि गहराई से देखें तो उसका सम्बन्ध हर विषय से होता है। शिक्षक इनका उपयोग अपनी कक्षा में कर सकता है और विद्यार्थियों की उसमें रूचि उत्पन्न कर सकता है। भाषा के शिक्षण में शिक्षक कला का उपयोग कर विद्यार्थियों में भाषा का ज्ञान और कौशल विकसित कर सकता है। जैसे– चित्र दिखाकर बच्चों से कहानियाँ लिखवाना, उन्हें नाटक के माध्यम से भाषा शैली एवं भाव–भंगिमाओं का ज्ञान

कराना। विद्यार्थियों में भाषा कौशल के विकास में विभिन्न गतिविधियाँ और मूल्यांकन करके उन्हें रचनात्मक रूप से सोचने पर बल देता है।

भाषा का अधिगम करना एक चेतन प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया नियमबद्ध होती है, लेकिन यदि इस प्रक्रिया को कला एवं खेल द्वारा सिखाया जाये तो इसमें विद्यार्थी बहुत कुछ सीख जाता है। इसमें भाषा के नियम शब्द ज्ञान, कौशल एवं रूप विज्ञान पर भलीभाँति ध्यान देकर बच्चों के अन्दर उस भाषा के प्रति रूचि जाग्रत कर सकते हैं।

रूचि को विद्यार्थियों की एक प्रेरक शक्ति कहा जा सकता है, जो हमारे ध्यान को व्यक्ति, वस्तु या क्रिया की तरफ उन्मुख करती है। रूचि को एक प्रभावपूर्ण अनुभव कहा जा सकता है, जो स्वयं अपनी ही सक्रियता से उत्तेजित होता है। दूसरे शब्दों में रूचि किसी सक्रिय या सक्रियता की सहकारिता के परिणाम के कारण हो सकती है। हम कह सकते हैं कि हम उन्हीं विषयों की ओर उन्मुख होते हैं जो हमारे अन्दर रूचि को उत्पन्न करते है। लैटिन भाषा में 'रूचि' शब्द का तात्पर्य है – ''यह आवश्यकता होती है या सम्बन्धित होती है।'' अतएव एक वस्तु जो हमारे अन्दर रूचि पैदा करती है, वह वस्तु है जो हमसे सम्बन्धित है या हमारे लिए आवश्यक है।

अभिरूचि और अवधान एक ही वस्तु देखने के दो दृष्टिकोण होते है। ये एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, सत्य तो यह है कि दोनों मानसिक ढाँचे में व्यवस्थित संस्कार हैं। किसी भी विषय–वस्तु में अभिरूचि रखने के लिए यह आवश्यक है कि उसके प्रति ध्यान दिया जाये। **गिलफर्ड (1967)** ''रूचि किसी क्रिया, वस्तु या व्यक्ति पर ध्यान देने, उसके द्वारा आकर्षित होने, उसे पसन्द करने तथा उससे सन्तुष्टि पाने की प्रवृत्ति है।''

जन्मजात मूल प्रवृत्तियों के व्यवहार के साथ–साथ व्यक्ति बहुत कुछ अपने वातवरण से सीखता है। उसकी बहुत–सी सीखी हुई क्रियायें बार–बार एक ही रूप में घटित होने के कारण स्थायी आचरण का रूप धारण कर लेती हैं। इसी स्थायी आचरण की, जन्मजात क्रियाओं के समान घटित होते रहने को 'आदत' कहते हैं। आदतों का मनुष्य के सीखे हुए व्यवहारों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है, जिस कार्य को हम बार–बार करते हैं वो हमारी आदत बन जाती हैं। अध्ययन के सम्बन्ध में आदतों का स्थान महत्वपूर्ण है। **क्रो व क्रो (1968)** का मत है ''छात्र,

चाहे वह तीसरी कक्षा के हो, हाई स्कूल के विद्यार्थी हों या कॉलेज के छात्र हों, अध्ययन की प्रभावहीनता के कारण ही वे अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में विफल होते हैं।'' **डॉ0 गोपालराव (1953)** के अनुसार ''वे सभी आदतें निश्चित उद्देश्य एवं उत्प्रेरित अभ्यास जिन्हें व्यक्ति अधिगम हेतु प्रयोग करता है अध्ययन आदतें कहलाती हैं।''

प्रत्येक शिक्षक अपनी शिक्षण विधि को अपने व्यक्तित्व के अनुसार तथा अपनी सूझबूझ के अनुसार स्वयं निर्धारित करता है। यह आवश्यक हो गया है कि शिक्षक को विभिन्न शिक्षण विधियों की प्रभावशीलता की जानकारी हो तथा यह ज्ञात हो कि कला एकीकृत अधिगम विधियों का किस तरह एवं किस स्तर पर किस सीमा तक उपयोग कर सकते हैं। शिक्षण एक सुनियोजित एवं गतिशील प्रक्रिया है। इसका प्रमुख उद्देश्य है कि बालक अधिक से अधिक सीखने के अनुभव प्राप्त करें। इस महान उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि शिक्षण के समय किसी न किसी ऐसी विधि का प्रयोग किया जाये जो उस समय की तात्कालिक आवश्यकताओं के अनुरूप अधिक प्रभावी हो। अर्थात् कला एकीकृत अधिगम विधियां विद्यार्थियों को आकर्षित करती हैं। इससे कक्षा–शिक्षण प्रभावी होता है।

1.2.0 कला एकीकृत अधिगम

ब्राउन (2007) कला एकीकरण प्राथमिक शिक्षा में घटते स्कोर के जवाब में सबसे आगे उभरकर सामने आया है। **कैवेल्टी और गोल्डबर्ग (1997)** कला शिक्षा में रूचि को नए सिरे से बड़े पैमाने पर प्रेरित किया गया है। **फाउलर (1996)** कला एकीकरण को पाठ्यक्रम पढ़ाने के साधन के रूप में उपयोग किया जाता है। कला से सम्बन्धित करके और उन्हें मूल पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाते हुए वे इसके प्रेरक ऊर्जा बन जाते हैं। **क्रुग और कोहेन ,एवरॉन (2000)** कला एकीकरण एक शिक्षण रणनीति है जो विचारों और अवधारणाओं को बना सकती है और कला के साथ पाठ्यक्रम को आसानी से असतत रूप से जोड़कर समझा जा सकता है। कला एकीकृत विधियों द्वारा विद्यार्थी सक्रिय रहते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि कला एकीकृत अधिगम क्या है? कला एकीकृत अधिगम सीखने और सीखाने के लिए दृष्टिकोण हैं। विभिन्न विषयों का अध्ययन–अध्यापन कला के द्वारा किया जाता

है। अर्थात् कला एकीकृत अधिगम के अन्तर्गत कई प्रकार की विधियों का प्रयोग कर सकते हैं जैसे – दृश्य कला, प्रदर्शन कला, ललित कला, मूर्तिकला, हस्तकला, आदि। प्रस्तुत शोध कार्य में दृश्य कला और प्रदर्शन कला का प्रयोग किया जायेगा।

1.2.1 दृश्य कला

यह कला का वह रूप है जो मुख्य रूप से 'दृश्य' प्रकृति का होता है। इसके अन्तर्गत कई प्रकार से उपविधियों का प्रयोग किया जा सकता है जैसे – रेखाचित्र (ड्राइंग), चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, फोटोग्राफी, वीडियो चलचित्र आदि। दृश्य कला पाठ्यचर्या का एक महत्वपूर्ण अंग है। यह एक ऐसा संवेदी अधिगम है जो अधिक समय तक चलता है, क्योकिं ऐसे अधिगम में एक से अधिक संवेदी अंग सम्मिलित होते है।

1.2.2 प्रदर्शन कला

शिक्षा में प्रदर्शन करने वाली कला छात्रों के मन, शरीर, भावनाओं सभी को अपनी अभिव्यक्ति करने का अवसर प्रदान करती हैं। प्रदर्शन कला के माध्यम से विद्यार्थी अपने विषय प्रकरण एवं विचारों को प्रदर्शित करते हैं। प्रदर्शन कला के द्वारा संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होता है यह अन्य विषयों के अध्ययन में भी उपयोगी हैं। उदाहरण के लिए रंगमंच एवं नाटक के छात्र विभिन्न शिष्टाचार एक ही स्थिति में सीख जाते हैं। यह रंगमंच या नाट्य कला सभी कलाओं का मिश्रित रूप है। नाटक का मतलब सिर्फ प्रदर्शन करना नहीं है बल्कि यह तो भाषा सीखने की प्रक्रिया का अंग है। इससे विद्यार्थियों को यह अवसर मिलता है कि वे जिस साधारण व यांत्रिकी भाषा का प्रयोग करते हैं उसे अपने–अपने व्यक्तित्व से जोड़कर अपना बना सकें। इस कारण से सभी कलाओं का प्रयोग इसमें सम्भव है। विभिन्न विषयों पर आधारित (गणित, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, भाषा, लोक संस्कृति) एक–एक मुद्दा दिया जाता है जिसका प्रदर्शन विद्यार्थी मंच पर प्रस्तुत करते हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) ने भी शिक्षकों की बदलती भूमिका को रेखांकित किया है। आज एक शिक्षक के लिए आवश्यक है कि वह विद्यार्थियों को जाने, समझे कक्षा में उनके व्यवहार को समझे उनके सीखने के लिए उपयुक्त परिस्थितियां तैयार करे, विद्यार्थियों की

जिज्ञासा को बनाए रखे, उन्हें अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करे व उनके अनुभवों का सम्मान करे। वर्तमान समय में ऐसी शिक्षण विधियों की आवश्यकता है जो हिन्दी विषय की ओर विद्यार्थियों को आकर्षित कर सकें।

1.3.0 समस्या का प्रादुर्भाव एवं औचित्य

शिक्षण एक कला है और कला जीवन का एक अंग है, आकर्षणहीन शिक्षण में कला का सदैव अभाव ही रहता है, शिक्षण भी शनैः शनैः कलाविहीन होकर यांत्रिक बनता जा रहा है। यांत्रिक प्रक्रिया में नियमितता अवश्य होती है, किन्तु शिक्षक की आन्तरिक सूझ को कोई स्थान नहीं होता, इसलिए शिक्षण में नीरसता आ जाती है। वर्तमान समय में शिक्षण बाल केन्द्रित है। हमें वैसा ही शिक्षण करना है जो विद्यार्थियों को आनन्दपूर्वक तरीके से सीखने में सहायता करता है। कक्षा–कक्ष में नई–नई गतिविधियां एवं सृजनात्मक कार्यों को स्थान दिए जाने कि आवश्यकता है। जिस प्रकार कला रचनात्मकता लिए रहती है, उसी प्रकार शिक्षण का उद्देश्य भी सृजन करना व रचनात्मकता उत्पन्न करना रहता है। बालक के अधिगम और विकास के लिए कलाओं का बहुत महत्व है। चाहें शोधकर्ता हो या शिक्षाशास्त्री, सभी इसी बात से सहमत हैं कि विद्यार्थियों के विकास को तेज करने के लिए उसके मस्तिष्क और शरीर को विभिन्न प्रकार के माध्यम से उद्दीप्त करने की आवश्यकता होती है।

वर्तमान समय में शिक्षण का स्वरूप परिवर्तित हो गया है। विद्यार्थी कक्षा में क्रियायें करते हैं, न कि वह मौन रहकर निष्क्रिय रूप से शिक्षा ग्रहण करते हैं। इसके साथ ही शिक्षण प्रभावशीलता, कक्षा–कक्ष अंतःक्रिया छात्र उपलब्धि को प्रभावित करती है। प्रभावी शिक्षण विद्यार्थी की उपलब्धि को बढ़ाने में सहायक होता है। हिन्दी भाषा के शिक्षण काल में शोधार्थिनी ने यह अनुभव किया कि वर्तमान में इस विषय के प्रति रूचि बहुत कम हो गई है। विद्यार्थी हिन्दी भाषा को बोलते हैं, समझते हैं, परन्तु एक विषय के रूप में अध्ययन करना नहीं चाहते हैं, इसमें केवल उत्तीर्ण होना उनके लिए पर्याप्त होता है। अधिकतर शिक्षक हिन्दी भाषा का शिक्षण सैद्धान्तिक रूप से करते हैं। हिन्दी विषय को पाठ्यपुस्तक विधि द्वारा पढ़ाते हैं। हिन्दी विषय का शिक्षण वैज्ञानिक आधार पर होना चाहिए। क्योंकि यह वैज्ञानिक भाषा है। हिन्दी भाषा में रूचि विकसित

करने के लिए नवीन, रूचिकर, कलात्मक व रचनात्मक विधियों का प्रयोग करना होगा जो बालक को रूचिकर लगे और वह इनके प्रति आकर्षित हो।

हिन्दी को साधारणतयाः नीरस विषय माना जाता है इस विषय को रटना या रटवाना व्यर्थ है। प्राचीन अध्ययन प्रणाली का सबसे बड़ा दोष यही था कि अध्ययन, अध्यापन, नियम और प्रयोग में परस्पर सम्बन्ध का अभाव था। विद्यार्थी कलात्मकता और कल्पनाशीलता के गुणों से परिपूर्ण होते हैं। विद्यार्थियों की इसी कल्पनाशील और कलात्मक भावनाओं को शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में प्रयोग किया जायेगा तो विद्यार्थी अध्ययन में रूचि लेंगे और शिक्षण प्रभावशाली होगा।

कला गतिविधियाँ कक्षा में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास, बौद्धिक प्रगति तथा अवलोकनात्मक दक्षताओं में गुणवत्ता लाने के लिए आवश्यक है। भाषा शिक्षण की पाठ्यचर्या को केन्द्र में रखते हुए कला को सीखने–सीखाने के माध्यम के रूप में तैयार किया जा सकता है। कला एकीकृत अधिगम एक ऐसा ही प्रयास है जिन्हें विद्यार्थी कला अनुभवों से जोड़ता है। कला एकीकरण अधिगम एक रचनात्मक शिक्षण–अधिगम दृष्टिकोण, कला रूपों की एक अवधारणा और समझ प्रदर्शित करते हैं। कला जब विभिन्न विषयों के साथ समेकित रूप से एकीकृत होती है तो शिक्षण प्रक्रिया का माध्यम बनती है।

प्रायः यह देखा गया है कि विद्यार्थी हिन्दी विषय को महत्वपूर्ण नहीं मानते है वह इसे रूचिपूर्ण तरीके से नहीं पढ़ते हैं और न ही शिक्षक उसे पढ़ाते हैं। कला एकीकृत अधिगम विधियों के द्वारा विद्यार्थियों में रूचि एवं अध्ययन आदतों और शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने का प्रयास किया जायेगा। वर्तमान समय में इस शोध अध्ययन द्वारा कला एकीकृत अधिगम का प्रयोग कर शिक्षण को प्रभावशाली बना सकेंगे। इस प्रकार शोधार्थिनी द्वारा इस अध्ययन क्षेत्र को खोजा गया तथा कुछ सम्बन्धित शोध प्राप्त हुए जो इस प्रकार है –

डी मोस, के एण्ड मोरिस, टी (2002). हाउ आर्ट इण्टीग्रेशन सपोर्ट स्टूडेट्स लर्निंगः प्रस्तुत शोध अध्ययन में अनुभवी शिक्षण कलाकारों द्वारा पारंपरिक निर्देशनों की तुलना में कला एकीकृत निर्देशन में संलग्न होने पर छात्रों को संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को समझने के लिए विद्यार्थियों पर अध्ययन किया। शोधकर्ता ने पाया कि जब छात्रों ने पारंपरिक शिक्षण प्रथाओं की तुलना में कला

एकीकृत पाठ से अधिगम किया तो उनके सीखने की क्षमता में सुधार हुआ और उन्हें सीखने के लिए प्रोत्साहन मिला।

अल्ब्राइट, रूथ (2012). द इम्पैक्ट ऑफ म्यूजिक ऑन स्टूडेन्ट्स एचीवमेन्ट इन दि थर्ड एण्ड फिफ्थ ग्रेड मैथ्स करीक्यूलम। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने छात्रों की गणित में उपलब्धि पर संगीत के प्रभाव की जांच की। जब संगीत को गणित के मुख्य शैक्षणिक विषय के साथ शामिल किया गया और परिणाम में पाया गया कि शिक्षकों और छात्रों को प्रदत्त का समर्थन करने के लाभ होता है कि कैसे गणित के पाठ्यक्रम में संगीत एकीकरण के साथ–साथ गणित में छात्रों की उपलब्धि बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

लोंग, ब्रिआना एम. (2014). आर्ट इंटीग्रेशन मॉडल्स और मैथड इन एलीमेन्ट्री आर्ट एजूकेशन। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य कला एकीकरण के सम्भावित मॉडल और विधियों की खोज करना था। शोधकर्ता ने पाया कि छात्रों के साथ साक्षात्कार के माध्यम से देखा कि छात्र खुले बंद प्रश्नों के उत्तर देते हैं और कक्षा अवलोकन करते हैं। परिणामस्वरूप पाया कि कला को शामिल करने की इकाईयों में सभी अकादमिक स्तरों के छात्रों ने अपने स्वयं के सीखने का आंकलन करने के लिए बेहतर प्रेरणा और क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पाया।

नोडिफन, ए. रीता (2014). दि रिलेशनशिप बिटवीन अपर बेसिक प्यूपल्स स्टडी हैबिट्स एण्ड देयर ऐकडमिक परफॉरमेन्स इन इंग्लिश लैंग्वेज पर अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया गया कि समूह अध्ययन, व्यक्तिगत अध्ययन और नोट्स बनाने की आदतों का विद्यार्थियों की अंग्रेजी भाषा में शैक्षिक निष्पादन के साथ सार्थक सम्बन्ध देखा गया।

आरूल, ए0एस0 (2014). रिलेशनशिप बिट्वीन स्टडी हेबिट्स एण्ड एकेडेमिक एचीवमेन्ट ऑफ हॉयर सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स। इस अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन आदतों का सम्बन्ध देखना था। निष्कर्ष में पाया गया कि अध्ययन आदतों तथा शैक्षिक उपलब्धि का सार्थक सम्बन्ध है।

एसेन, एकपेनयंग (2015). स्टूडेन्ट्स इंटरेस्ट इन सोशल स्टडीज एण्ड ऐकेडमिक एचीवमेन्ट इन टेरीटरी इन्स्टीट्यूट सन्स इन क्रॉस रिवर स्टेड नाइजीरिया। अध्ययन का उद्देश्य सामाजिक विज्ञान

में और शैक्षिक उपलब्धि के क्षेत्र में देखा और परिणाम में पाया गया कि सामाजिक अध्ययन विषय में छात्रों की रूचि उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक रूप से सम्बन्धित है। शिक्षक विषय वस्तु को अच्छे से समझाये ताकि प्रत्येक विद्यार्थी अन्य विषय में रूचि उत्पन्न कर सके।

वी डी सुखाना (2015). ए स्टडी ऑन ऐकेडैमिक एचीवमेन्ट एण्ड पर्सनौलिटी ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स। प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि और व्यक्तित्व के सन्दर्भ में 300 छात्रों को लिया गया और शैक्षिक उपलब्धि और व्यक्तित्व में सकारात्मक सम्बन्ध पाया गया।

अवेले, उजू एफ. एण्ड ओलोफू पॉल ए. (2016) स्टडी हैबिट्स एण्ड इट्स इम्पैक्ट ऑन सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स ऐकडमिक परफोरमेन्स ऑन बॉयोलॉजी इन द फेडरल कैपिटल टैरिओटरी। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य अध्ययन आदतों का प्रभाव माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक गतिविधियों पर देखना था। निष्कर्ष में पाया गया कि अध्ययन आदतें एवं शैक्षिक क्रियायें आपस में सहसम्बन्धित हैं और यह शिक्षकों के लिए मार्गदर्शन करती हैं। छात्रों की अच्छी अध्ययन आदतों को विकसित करने में उनको शैक्षणिक सफलता मिलती हैं।

ब्रोलिट, एल. एण्ड ग्रहम, एन.जे. (2016). यूजिंग आर्ट इंटिग्रेशन टू मेक साइंस लर्निंग मेमोरेबल इन द अपर एलिमेन्ट्री ग्रेड्स। यह एक क्वासी एक्सपेरिमेन्टल स्टडी है। प्रस्तुत शोध में उच्च प्राथमिक छात्रों को कला के माध्यम से अधिगम कराया। इस अध्ययन में ग्रेड 3 से 5 में भौतिक विज्ञान सीखने पर STEAM (Science, Technology Engineering Mathematics) तथा कला एकीकृत अधिगम पाठ के प्रभाव की जांच की। अध्ययन में पाया गया कि STEAM के पाठ से अवगत कराए गए छात्रों ने भौतिक विज्ञान की उपलब्धि पर अधिक सुधार किया।

भामरे, योगिता; (2017) टीचिंग ऑफ लेंग्वेज स्किल्स थ्रू सांग, फिल्म, सीग्मेन्ट एण्ड वीडियो क्लिप्स। इस अध्ययन का उद्देश्य भाषा के शिक्षण कौशल को नवीन रूचिकर विधियों द्वारा सिखाना था। नवीन विधियों के द्वारा अंग्रेजी भाषा कौशल को सीखाना जिससे वह रूचिपूर्ण तरीके से सीखी जा सके। यह प्रक्रिया विद्यार्थियों को ज्यादा रूचिकर लगी जिससे वह अंग्रेजी भाषा सीख सके।

मशीव राविमा, नैम मुबारक (2017) ए स्टडी ऑन स्टडी हैबिट्स एण्ड ऐकडमिक परफोरमेन्स ऑफ स्टूडेन्ड्स। इस लेख में यह पाया गया कि अध्ययन आदतें ज्ञान की अवधारणा क्षमता से सार्थक रूप से सम्बन्धित हैं और अध्ययन आदतों का स्टूडेन्ट्स की शैक्षणिक निष्पत्ति पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

फैज, मोहम्मद और रवान, जबून निसा (2017) ए स्टडी ऑफ एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ अपर प्राइमरी स्कूल इन रिलेशन टू देअर सोशियो–इक्नॉमिक स्टेटस। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शौक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध का अध्ययन करना था। अध्ययन में पाया कि औसत सामाजिक आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की उच्च उपलब्धि व निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियो की कक्षा में निम्न उपलब्धि होती हैं।

एस.आर. वासु, बी. वेंकटरथनम् (2017). स्टडी हैबिट्स ऑफ अपर प्राइमरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू लेवल ऑफ एसपीरेशन इन वेल्लोर डिस्ट्रिक्ट, पर अध्ययन में पाया कि उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों की अध्ययन आदतें औसत से ऊपर हैं तथा आकांक्षा का स्तर औसत पाया गया। पारिवारिक आय, पिता की शिक्षा, बच्चों की संख्या का अध्ययन आदतों एवं आकांक्षा स्तर पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

शर्मा, गीतिका (2017). स्टडी हैबिट्स ऑफ क्लास 8 स्टूडेन्ट्सः ए कम्परेटिव एनालिसिस पर अध्ययन में पाया कि सभी प्रकार के विद्यालय जैसे सरकारी, गैर सरकारी विद्यालयों और निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ उच्च सहसम्बन्ध होता है। सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें अच्छी पायी गयी बजाय निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों से।

सभी शोध साहित्य के गहन अध्ययन के बाद यह कहा जा सकता है कि अभी तक हिन्दी विषय में कला एकीकृत अधिगम विधियों के साथ अध्ययन आदतें, रूचि, शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन शोधार्थिनी के संज्ञान में नहीं आया है। अतः उपरोक्त विवेचन के फलरूवरूप शोधार्थिनी के मस्तिष्क में कुछ स्वाभाविक जिज्ञासायें एवं प्रश्न उत्पन्न हुए जो प्रस्तुत शोध समस्या के चयन का कारण बने। यह जिज्ञासायें एवं प्रश्न निम्न हैं –

1. हिन्दी जैसी वैज्ञानिक भाषा के शिक्षण के लिए किन विधियों का किस प्रकार प्रयोग करें कि सभी विधाओं का शिक्षण रूचिकर हो सके?
2. क्या कला एकीकृत अधिगम विधियों द्वारा हिन्दी शिक्षण को प्रभावी बनाया जा सकता है?
3. क्या कला एकीकृत अधिगम विधियों की सहायता से विद्यार्थियों की विषयगत उपलब्धि स्तर को बढ़ाया जा सकता है?
4. क्या कला एकीकृत अधिगम विधियों से छात्रों की हिन्दी विषय में रूचि को बढ़ाया जा सकता है?
5. क्या कला एकीकृत अधिगम विधियों से छात्रों की अध्ययन आदतें प्रभावित होती है?

अतः उपरोक्त सभी प्रश्नो का उत्तर प्राप्त करने के प्रयास में शोधार्थिनी ने हिन्दी शिक्षण में कला एकीकृत अधिगम विधियों को अपनी शोध समस्या के रूप में चयनित किया है। इस शोध अध्ययन द्वारा शोधार्थिनी कक्षा–कक्ष शिक्षण में कला एकीकृत अधिगम विधियों के महत्व एवं प्रभाव को जानने का प्रयास करेगी। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन आदतें, रूचि पर कला एकीकृत अधिगम विधियों का प्रभाव पड़ता है या नहीं इस प्रयोजन हेतु शोधार्थिनी ने प्रस्तुत समस्या का चयन किया है।

1.4.0 समस्या कथन

"हिन्दी विषय के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, रूचि एवं अध्ययन आदतों पर कला एकीकृत अधिगम विधियों के प्रभाव का अध्ययन।"

1.5.0 समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

1.5.1 उच्च प्राथमिक स्तर – वे विद्यालय जो किसी न किसी शैक्षिक संस्था द्वारा मान्यता प्राप्त तथा सरकार द्वारा संचालित उन है जिनमें कक्षा 6 से 8 तक की कक्षाओं में अध्ययन अध्यापन हो।

कार्यात्मक परिभाषा– प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च प्राथमिक स्तर से तात्पर्य कक्षा 7वीं के विद्यार्थियों से है। जिनकी आयु लगभग 10 से 14 वर्ष तक होती है।

1.5.2 शैक्षिक उपलब्धि – एनेस्टासी (1961) के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त सफलता के स्तर का मूल्यांकन है जो विद्यार्थियों के शैक्षिक निर्देशों को समझने के प्रयास एवं उनके स्तर व आयु के अनुसार निर्धारित पाठ्यक्रम के लक्ष्यों की प्राप्ति से अभिव्यक्ति होती है। जिसका परिणाम उनको वार्षिक परीक्षा में किये गये कार्यों से मिलता है।

कार्यात्मक परिभाषा – प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्राय उच्च प्राथमिक स्तर के 7वीं कक्षा के विद्यार्थियों के परीक्षा में प्राप्त अंकों के कुल प्रतिशत से है। विद्यार्थियों द्वारा कक्षा 6 के अन्त में प्राप्त परिणामों को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में स्वीकार किया जायेगा। शोधार्थिनी द्वारा उच्च प्राथमिक स्तर के कक्षा 7 के विद्यार्थियों को न्यादर्श चयन में सम्मिलित किया जायेगा और कक्षा 7 में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करने के लिए विद्यार्थियों द्वारा उत्तीर्ण कक्षा 6 के वार्षिक परिणामों को लेना अधिक सार्थक होगा।

1.5.3 रूचि

क्रो एण्ड क्रो (1973) के अनुसार रूचि वह अभिप्रेरक शक्ति है जो हमें किसी व्यक्ति, वस्तु या क्रिया की ओर ध्यान देने के लिए बाध्य करती है अथवा यह एक प्रभावात्मक अनुभूति है जो स्वयं क्रिया द्वारा अभिप्रेरित होती है। दूसरे शब्दों में रूचि किसी क्रिया का कारण भी हो सकती है और उस क्रिया में भाग लेने का परिणाम भी।

कार्यात्मक परिभाषा – प्रस्तुत शोध अध्ययन में रूचि से तात्पर्य हिन्दी विषय के प्रति रूचि, आकर्षण आदि से है। यह एक आंतरिक शक्ति है जो विद्यार्थियों को हिन्दी विषय की ओर आकृष्ट करेगी।

1.5.4 अध्ययन आदतें

गिल्वर्ट वॉरेन (1941) के अनुसार अध्ययन आदतों में निम्न बातें सम्मिलित है–

1. पढने और नोट्स की आदतें
2. एकाग्रचित होकर अध्ययन
3. समय को विभाजित करना
4. विद्यालयी कार्यों के प्रति सामान्य आदत और अभिवृत्ति

गैरेट के अनुसार (1971) – ''आदत उस व्यवहार को दिया जाने वाला नाम है जो इतनी अधिक बार दोहराया जाता है कि यंत्रवत हो जाता है।''

कार्यात्मक परिभाषा – प्रस्तुत शोध अध्ययन में अध्ययन आदतों से तात्पर्य विषय–वस्तु या पाठ को समझने की योग्यता, एकाग्रता, अभ्यास, नोट करना ,गृहकार्य की आदत व हिन्दी भाषा को समझने की योग्यता से है। आदत कार्य का वह रूप है जो आरम्भ से स्वेच्छा से और जान–बूझकर किया जाता है परन्तु बार–बार किये जाने के कारण वह स्वतः हो जाता है।

1.5.5 कला एकीकृत अधिगम

लिन बी. सिल्वरस्टीन एवं सीन लेने (2010) के अनुसार "कला एकीकृत अधिगम शिक्षण के लिए एक उपागम है जिसमें विद्यार्थी कला के माध्यम से समझ का निर्माण और प्रदर्शन करते हैं। विद्यार्थी एक रचनात्मक प्रक्रिया में संलग्न होता है जो एक कला के रूप में अन्य विषयों के क्षेत्र को जोड़ता है और दोनों में विकसित उद्देश्यो को पूरा करता है।"

कार्यात्मक परिभाषा

कला एकीकृत अधिगम से तात्पर्य है कि जब कला विभिन्न विषयों के साथ समेकित रूप से एकीकृत होती है तो शिक्षण की प्रक्रिया का माध्यम बनती है और इसके द्वारा विभिन्न विषयों को आसानी से एवं अनान्दपूर्वक तरीके से समझा जा सकता है। प्रस्तुत शोध में कला एकीकृत अधिगम विधियों में निम्न विधियों का प्रयोग किया जायेगा–

- प्रदर्शन कला के अन्तर्गत रंगमंच विधि का प्रयोग किया जायेगा।
- दृश्य कला के अन्तर्गत कथापट विधि ,पॉवर प्वान्इट प्रस्तुतीकरण एवं, कार्टून वीडियो आधारित अधिगम सामग्री का प्रयोग किया जायेगा।

1.6.0 अध्ययन के उद्देश्य

1. कला एकीकृत अधिगम विधियों पर आधारित हिन्दी विषय की पाठ योजनाओं का निर्माण करना।
2. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में शैक्षिक उपलब्धि पर कला एकीकृत अधिगम विधियों के प्रभाव का अध्ययन करना ।
3. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में रूचि पर कला एकीकृत अधिगम विधियों के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर कला एकीकृत अधिगम विधियों के प्रभाव का अध्ययन करना।

1.7.0 अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. हिन्दी विषय में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर कला एकीकृत अधिगम विधियों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
2. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में रूचि पर कला एकीकृत अधिगम विधियों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
3. हिन्दी विषय में अध्ययनरत उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर कला एकीकृत अधिगम विधियों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

1.8.0 अध्ययन की परिसीमाएँ

अध्ययन को सफल व सार्थक बनाने व उसकी प्रकृति को ध्यान में रखते हुए अध्ययन को निम्न क्षेत्रों में सीमांकित किया गया है–

1. प्रस्तुत शोध कार्य को उत्तर प्रदेश के आगरा जिले के उच्च प्राथमिक विद्यालयों तक सीमित किया जाएगा।
2. न्यादर्श को उच्च प्राथमिक स्तर के कक्षा 7 के विद्यार्थियों तक सीमित रखा जाएगा।
3. प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में 60 विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा। 30 विद्यार्थी प्रयोगात्मक समूह के तथा 30 विद्यार्थी नियंत्रित समूह के होंगे।

1.9.0 अध्ययन में प्रयुक्त चर

स्वतंत्र चर – कला एकीकृत अधिगम विधियां

आश्रित चर – शैक्षिक उपलब्धि, रूचि, अध्ययन आदतें

नियंत्रित चर – प्रयोग के समय ऐसे असम्बद्ध चर उपरिथत होते हैं जो प्रयोग के परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं जैसे– लिंग, आयु, कक्षा अवधि।

1.10.0 अध्ययन विधि

बेस्ट (2010) के अनुसार– प्रयोगात्मक पद्धति इस बात का वर्णन व विश्लेषण करती है कि क्या होगा? या सावधानीपूर्वक नियंत्रित की गई दशाओं में क्या घटित हो सकता है।

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा। इस अध्ययन में न्यादर्श को सोद्देश्य विधि से चयनित किया जायेगा। न्यादर्श को दो समूहों में बांटा जायेगा– नियंत्रित समूह एवं प्रयोगात्मक समूह। दोनों समूहों पर पूर्व परीक्षण के अन्तर्गत आश्रित चरों– शैक्षिक उपलब्धि, रूचि तथा अध्ययन आदतों का उपयुक्त उपकरणों द्वारा आंकलन किया जायेगा। तत्पश्चात् प्रयोगात्मक समूह को कला एकीकृत अधिगम विधियों से शिक्षण कराकर उपलब्धि परीक्षण किया जायेगा।

1.11.0 जनसंख्या

अध्ययन की जनसंख्या उत्तर प्रदेश के आगरा जिले के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी जो किसी न किसी मान्यता प्राप्त विद्यालय से सम्बन्धित है।

1.12.0 अध्ययन हेतु न्यादर्श

गुड (1952) के अनुसार न्यादर्श सभी वैज्ञानिक प्रक्रियाओं का अत्यावश्यक अंग है। अध्ययन हेतु आगरा जिले के उच्च प्राथमिक विद्यालय की कक्षा 7 के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जायेगा।

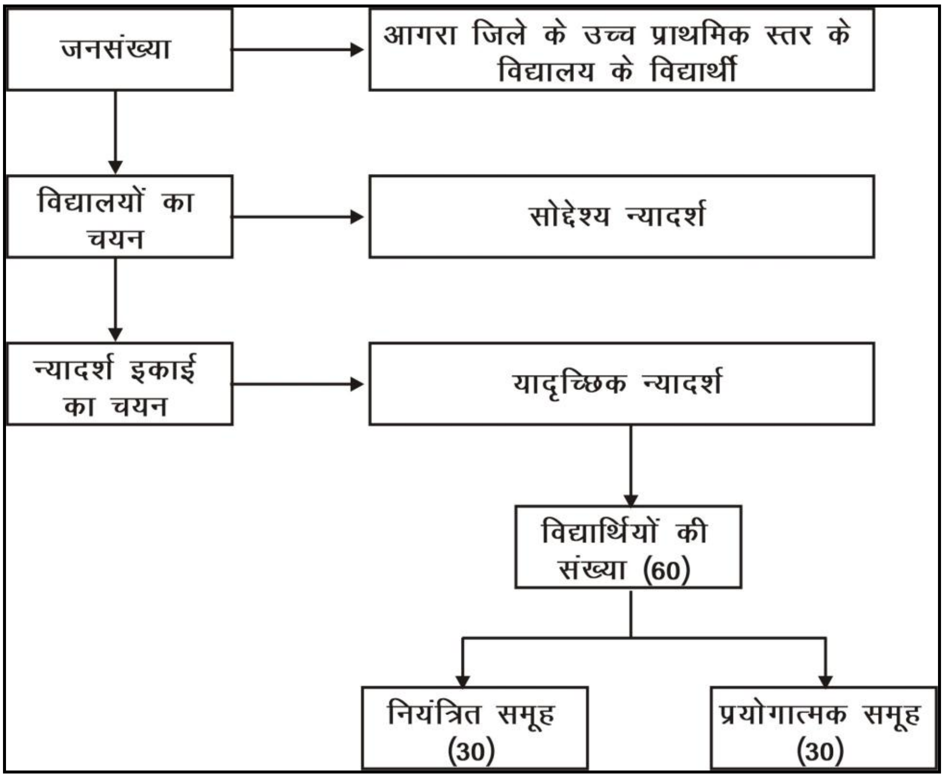

चित्र 2.0 : न्यादर्श चयन प्रक्रिया

1.13.0 अध्ययन की प्रयोगात्मक प्रक्रिया

अध्ययन की प्रयोगात्मक प्रक्रिया को तीन चरणों में सम्पन्न किया जाएगा–

1. नियोजन चरण
2. प्रायोगिक चरण
3. मूल्यांकन चरण

प्रथम चरणः नियोजन

नियोजन चरण के अन्तर्गत अधिगमकर्ताओं की प्रकृति को ज्ञात कर विषयवस्तु विश्लेषण के आधार पर नियंत्रित तथा प्रयोगात्मक समूह के लिए समान प्रकरणों पर कला एकीकृत अधिगम विधियों पर आधारित पाठयोजनाओं का निर्माण किया जायेगा।

द्वितीय चरणः प्रयोग

कला एकीकृत अधिगम विधियों पर आधारित शिक्षण में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, रूचि, तथा अध्ययन आदतों पर प्रभाव को जानने के लिए अध्ययनकर्ता द्वारा

विकसित पाठयोजनाओं का कक्षा 7 के विद्यार्थियों पर क्रियान्वयन किया जायेगा। शोधार्थिनी द्वारा विद्यार्थियों को उनके उपस्थिति रजिस्टर के आधार पर दो भागों में बांटा जायेगा, प्रयोगात्मक समूह तथा नियंत्रित समूह। कला एकीकृत अधिगम विधियों पर आधारित पाठयोजनाओं के द्वारा प्रयोगात्मक समूह को शिक्षण कराया जायेगा। शैक्षिक उपलब्धि, रूचि तथा अध्ययन आदतों के परीक्षणों का प्रशासन किया जायेगा।

तृतीय चरणः मूल्यांकन

प्रस्तुत चरण के अन्तर्गत शैक्षिक उपलब्धि, रूचि तथा अध्ययन आदतों के परीक्षणों का प्रशासन तथा प्राप्त प्रदत्तो के आधार पर कला एकीकृत अधिगम विधियों के प्रभाव का मूल्यांकन किया जायेगा तथा निष्कर्ष प्राप्त होंगे।

1.14.0 अध्ययन की प्रक्रिया

अध्ययन की प्रक्रिया निम्न चरणों में क्रियान्वित होगी।

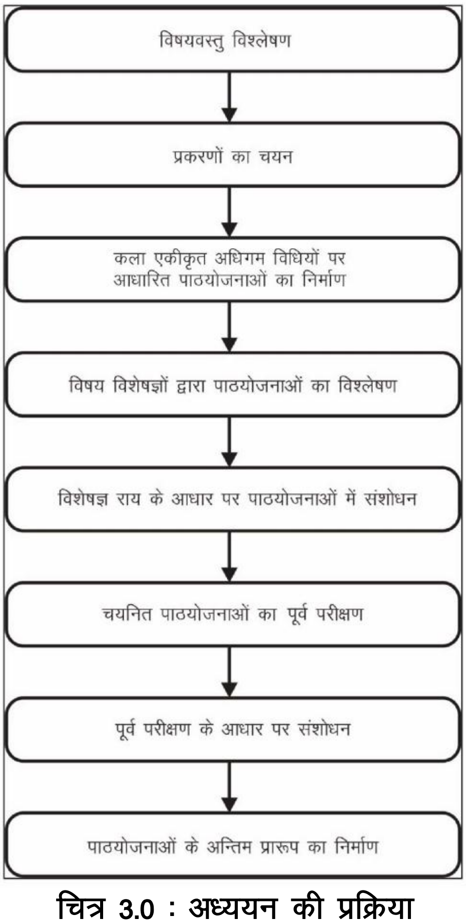

चित्र 3.0 : अध्ययन की प्रक्रिया

1.15.0 अध्ययन का संरचनात्मक प्रारूप

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा निर्धारित लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने के उद्देश्य से तथा अध्ययन की प्रक्रिया को दृष्टिगत रखते हुए पूर्व तथा पश्च परीक्षण, समानान्तर समूह प्रारूप का प्रयोग किया जायेगा।

तालिका 1.0 : अध्ययन का प्रारूप

<table>
<tr><th>क्र0 स0</th><th>समूह</th><th>पूर्व परीक्षण</th><th>शिक्षण क्रियायें</th><th colspan="2">अवधि</th><th>पश्च परीक्षण</th></tr>
<tr><td>1.</td><td>प्रयोगात्मक समूह</td><td rowspan="2">शैक्षिक उपलब्धि
रूचि
अध्ययन आदतें</td><td>कला एकीकृत अधिगम विधियों पर आधारित शिक्षण</td><td>चक्र अवधि 40 मिनट</td><td>सम्पूर्ण कार्य 30 दिन</td><td rowspan="2">शैक्षिक उपलब्धि
रूचि
अध्ययन आदतें</td></tr>
<tr><td>2.</td><td>नियन्त्रित समूह</td><td>परम्परागत विधि से शिक्षण</td><td>चक्र अवधि 40 मिनट</td><td>सम्पूर्ण कार्य 30 दिन</td></tr>
</table>

1.16.0 शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा।

1. अध्ययन आदतों के मापन हेतु स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया जायेगा।
2. शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया जायेगा।
3. रूचि के मापन हेतु स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया जायेगा।

1.17.0 अध्ययन हेतु सांख्यिकीय विधियां

प्रयोग तथा उपकरणों से प्राप्त सूचनाओं व प्रदतों से शोधकार्य सम्बन्धी उपलब्धियों तथा परिणामों का निरूपण करने हेतु आवश्यकतानुसार वर्णनात्मक व निष्कर्षात्मक सांख्यिकी का प्रयोग किया जायेगा।

- **वर्णनात्मक सांख्यिकी –** मध्यमान ,प्रमाणिक विचलन
- **निष्कर्षात्मक सांख्यिकी–** टी परीक्षण

1.18.0 अध्ययन की सार्थकता

- प्रस्तुत शोध की सार्थकता हिन्दी विषय के अध्ययन के लिए विद्यार्थियों में रूचि उत्पन्न करना है। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए कला एकीकृत अधिगम विधियों का प्रयोग कर हिन्दी शिक्षण को प्रभावशाली बनाया जा सकेगा।
- जब हम कला एकीकृत अधिगम में कला की चर्चा सीखने–सिखाने के सन्दर्भ में करेंगे तो हम पायेंगे कि कला का महत्व दो प्रकार से है–पहला स्वतंत्र विषय के रूप में तथा दूसरा अन्य विषयों को सीखने के माध्यम के रूप में।
- कला एकीकृत अधिगम विधियों पर आधारित अधिगम में विद्यार्थी विभिन्न प्रत्ययों का ज्ञान देखकर व क्रिया करके, सुनकर प्राप्त कर सकते हैं। अतः वे अधिकतम इन्द्रियों के प्रयोग द्वारा स्थायी ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।
- कला एकीकृत अधिगम विधियां विद्यार्थियों को अपनी योग्यता एवं गति के अनुरूप शिक्षा प्राप्त करने में सहायक होंगी। कला को शिक्षा का आधार बनाना विद्यार्थियों को सक्रिय शिक्षार्थी बनाएगा।
- विद्यार्थियों का ध्यान कला अपनी ओर आकर्षित करती है। अतः विद्यार्थी इन विधियों के द्वारा विभिन्न प्रत्ययों के शिक्षण में रूचि लेंगे और उसे स्वयं पढ़ने का प्रयास करेंगे।
- यह अध्ययन शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के लिए महत्वपूर्ण होगा। क्योंकि इससे नवीन शिक्षण विधियों के प्रयोग हेतु प्रशिक्षणार्थी प्रेरित होंगे और उनका शिक्षण प्रभावशाली होगा।
- प्रस्तुत शोध समस्या के परिणामों के आधार पर हिन्दी शिक्षण के पाठ्यक्रम में क्रियाओं को समाहित किया जा सकेगा जिससे विद्यार्थियों का ध्यान क्रियाओं के समावेशन करने में केन्द्रित हो सकेगा और विद्यार्थी रूचिपूर्ण अध्ययन कर सकेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अल्ब्राइट, रूथ (2012). द इम्पैक्ट ऑफ म्यूजिक ऑन स्टृडेन्ट्स एचीवमेन्ट इन द थर्ड एण्ड फिफ्थ ग्रेड मैथ करीक्यूलम Eric number Ed536649 ISBN-978-1-2671-0515-8
- आरूल, ए.एस. (2014). रिलेशनशिप बिट्वीन स्टडी हेबिट एण्ड एकेडेमिक एचीवमेन्ट ऑफ हॉयर सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्टस्। Vol. 4 (6) ISSN-2249-555X https://files.eric.ed.gov
- एसेन, एकपेनयंग (2015). स्टूडेन्ट्स इंटरेस्ट इन सोशल स्टडीज एण्ड ऐकेडमिक एचीवमेन्ट इन टेरीटरी इन्स्टीट्यूट सन्स इन क्रॉस रिवर स्टेड नाइजीरिया यूरोपियन जनरल ऑफ ट्रेनिंग एण्ड डेवलपमेन्ट स्टडीज vol.2,no.2.pp.35-40. June 2015
- बलवन्त,राणा (2016).कला शिक्षण ISBN-978-81-7457-410-7
- भामरे योगिता,(2017). टीचिंग ऑफ लेंग्वेज स्कील्स थ्रो सांग, फिल्म, सीग्मेन्ट एण्ड वीडियो क्लिप्स http://hdl.handle.net/10603/19619
- नोडिफन.ए.रीता.(2014). दि रिलेशनशिप बिटवीन अपर बेसिक प्यूपल्स स्टडी हैबिट्स एण्ड देअर एकेडमिक परफॉरमेन्स इन इंगलिश लैंग्वेज। British journal of educational psychology 76 (1)41,55.2006
- ब्रोलिट, एल. एण्ड ग्रहम, एन.जे. (2016). यूजिंग आर्ट इंटिग्रेशन टू मेक साइंस लर्निंग मेमोरेबल इन द अपर एलिमेन्ट्री ग्रेड्स Journal for learning through the art,12(1)
- कॉल, लोकेश (2010). मैथडलॉजी ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, विकास प्रकाशन, नई दिल्ली।
- कार्टर, वी. गुड (1954). मैथडलॉजी ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, एप्लीटेन सेन्चुरी, न्यूयॉर्क, पृ0सं0 153
- Cbseacademic. nic.in web material circulars 2019 art integration
- चौहान, संदीप कुमार पाराशर, ज्योतिमा और शर्मा, कु. पूनम (2017) . बाल मनोविज्ञान एक अध्ययनः आर लाल बुक डिपो, मेरठ, उत्तर प्रदेश

- डी मोस, के एण्ड मोरिस, टी (2002). हाउ आर्टस इण्टीग्रेसन सपोर्ट स्टूडेट्स लर्निंग ArtsEdSearch©arteducationpartnership.All rights reserved
- डोनोग, जोम (2014). रिसर्च मेथड फॉर इंग्लिश लैग्वेज टीचर्स ई–बुक ISBN – 9781317859192 Retrieved from https://doi.org 110.4324178121832548
- एफ. एवेले उजू (2016) . स्टडी हैबिट्स एण्ड इट्स इफैक्ट ऑन सैकेण्डरी स्कूल स्टूडैन्ट्स ऐकेडमिक परफोरमेन्स इन बायोलॉजी। ऐकेडमिक जनरल Vol 12(10): ISSN 19903839 pp. 583-588. Reterieved from DOI : 10.5897/ERR2016.3117
- फैज, मोहम्मद और रवाना, जबून निसा (2017) . अ स्टडी ऑफ एकेडमिक अर्चावमेंन्ट ऑफ आपर प्राइमरी स्कूल इन रिलेशन टू देअर सेशियो–इक्नॉमिक स्टेट्स, एशियन जनरल ऑफ रिसर्च इन सेशियल साइन्सेज एण्ड हयूमोनटिज, 7(6) 121-127.doi.105958/2249-7315.2017-00336.7 Retrieved from https://doi.org/10.1016/ i.sbcpro.2011.03.235
- गैरेट, एच.ई. (1971). जनरल साइकोलॉजी हांगटन इण्टरनेशनल, न्यूयॉर्क पेज नं0 282
- गैरेट, हेनरी ई. और वुडवर्थ, आर.एस. (1981) . स्टैटिस्टिक्स इन साइकोलॉजी एण्ड एजूकेशनः मिसेज ए. एफ. शेख फॉर वकील्स, फेफ्फेर एण्ड सिमोन्स लि. बॉम्बे।
- गिरफोर्ड (1978). साइकोमैट्रिक मैथड, न्यूयॉर्क, एम0सी0 ग्रोहिल पब्लिकेशन।
- गुड, बार स्केट्स (1966). मैथडलॉजी ऑफ रिसर्च, साइकोलॉजी एण्ड सोशलॉजी, सेन्चुरी कफट्स इडक, न्यूयॉर्क।
- गुप्ता प्रेफेसर एस.पी. और गुप्ता डा. अलका (2008) . सांख्यिकीय विधियांः शारदा पुस्तक भवन इलहाबाद, उ0 प्र0
- https://www.edutopia.org/stw arts integration reform overview
- किलपैट्रिक, डब्ल्यू.एच. (1954). शिक्षा में शिक्षक की भूमिका, मैकमिलन एण्ड कम्पनी, न्यूयॉर्क।

- लोंग, ब्रिआना एम. (2014). आर्ट इंटीग्रेशन मॉडल्स और मैथड इन एलीमेन्ट्री आर्ट एजूकेशन https://scholarworks.gsu.edu/art_design.theses/141
- मशीन, राविमा; नैमा मुबारक (2017). ए स्टडी ऑन स्टडी हैबिट्स एण्ड ऐकेडमिक परफोरमेन्स ऑफ स्टूडेन्ट्स, इन्टरनेशनल जनरल ऑफ एशियन सोशल साइन्स Vol. 7, No 10, 891-897 Retrieved from DOI 10.18488/Journal/.2017.710.891.897
- नेशनल करिकूलम फ्रेमवर्क 2005 नेशनल कॉउन्सिल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग दिल्ली।
- NCERT Training pacakage on art education for primary teachers (2018) National Council of Educational Research and Training ISBN-978-93-5292-107
- पचौरी, प्रो. गिरिश (2014). प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास : आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, उत्तर प्रदेश
- राठौर,डॉ. कुसुमलता (2016) कला का अध्यापन ISBN-978-93-83070-36-7
- शर्मा , आर०ए० (2006) शैक्षिक अनुसंधान, मेरठ आर. लाल बुक डिपो
- शर्मा.ए बी० एल० (2017) कला एवं संगीत आर० लाल० बुक डिपो
- शर्मा, गीतिका (2017). स्टडी हैविट्स ऑफ क्लास 8 स्टूडेन्ट्सः ए कम्परेटिव एनालाइसिस इम्पैक्ट इंटरनेशनल जनरल ऑफ रिसर्च इन एपलाइड नेचुरल एण्ड सोशल सांइस Vol.5,issue6,jun2017,79-88
- शवेलसन, आर.जे. (1973). वॉट इस द बेसिक टीचिंग स्कील जनरल ऑफ टीचर एजूकेशन, 14: 144—153
- शिक्षा आयोग (1964-66) जय पालन, एन, (2000) . हिस्ट्री ऑफ एजूकेशन इन इंडिया अटलान्टिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
- श्रीवास्तव , डी. एन. (2015) मनोवैज्ञानिक प्रक्रियायें अग्रवाल प्रकाशन ,आगरा 297

- एस.आर. वासु, बी. वेंकटरथनम् (2017). स्टडी हैविड्स ऑफ अपर प्राइमरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू लेवल ऑफ एसपीरेशन इन वेल्लोर डिस्ट्रीक्ट International educational scientific research journal E-ISSN:2455-295X vol:3 issue:6JUN2017
- सुखाना, वी.डी. (2015). ए स्टडी ऑन एकेडमिक एचीविमेन्ट एण्ड पर्सनैलिटि ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्टस। UDK;37.37.213.77 doi:10.17810/2015-27
- तिवारी ,डॉ॰ रामचन्द्र (1964). हिन्दी का गद्य साहित्य ,विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
- उपाध्याय, एस.के. व अन्य (2006). सूचना सम्प्रेषण तथा शैक्षिक तकनीकी, विजय प्रकाशन, लुधियाना, पृ0सं0 1–3
- वेस्ट, जोन डब्ल्यू और कहान, जेम्स वी. (2002). रिसर्च इन एजूकेशन प्रेटिस, हॉल ऑफ इण्डिया प्राइवेट लि. नई दिल्ली